1

''आपकी डाक आई है!''

(1:1-7)

अलग-अलग समाजों में पत्र लिखने के अलग-अलग रूप हैं। जब मैं पत्र लिखता हूं तो मैं उस व्यक्ति का नाम पहले लिखता हूं, जिसे पत्र लिखा जा रहा हो और अन्त में अपना नाम लिखता हूं। नये नियम के समय में पत्र आमतौर पर लम्बी, लपेटवीं शीट पर लिखे जाते थे। लेखक पत्र में पहले अपना नाम लिखता था, जिससे प्राप्तकर्त्ता को तुरन्त पता लग जाए कि पत्र किसने भेजा है। उस समय में पत्र आमतौर पर लेखक के नाम, उन लोगों के पदनाम, जिन्हें भेजा जाना होता और अभिवादन से आरम्भ होता था। पौलुस ने उसी शैली का इस्तेमाल किया, जिससे उसके पाठक परिचित थे, यानी जो शैली आम पत्राचार में इस्तेमाल की जाती थी। उसे इसके मूल रूप की इतनी चिन्ता नहीं थी, जितनी इस बात की कि यह समझ आने योग्य होना चाहिए।

रोमियों के नाम पौलुस के पत्र में आरम्भिक आयतों में तीन सामान्य बातें हैं:

(1) लेखक का नाम: ''पौलुस'' (आयत 1क)।
(2) प्राप्तकर्त्ताओं का पदनाम: ''सब ... जो रोम में'' (आयत 7क)।
(3) अभिवादन: ''अनुग्रह और शान्ति'' (आयत 7ख)।

परन्तु पौलुस ने प्रचलित प्रबन्धों को अपने उद्देश्य के लिए इस्तेमाल किया। उसने हर भाग को महान सच्चाइयों से पैक किया। इस पाठ में हम उन सच्चाइयों को बड़ी सावधानी से खोलेंगे।

पौलुस की ओर से (1:1-6)

रोमियों की पुस्तक के आरम्भिक शब्दों से हमें पौलुस के पत्रों की विशेषता का परिचय मिलता है। एक विचार उसे किसी दूसरे की चर्चा के लिए ले जाता है, जो आगे किसी और की चर्चा के लिए, जो किसी और चर्चा के लिए ले जाता। वह आमतौर पर एक लम्बे वाक्य में एक से दूसरी अवधारणा में ले गया। इस पत्र की पहली सात आयतें एक ही वाक्य में हैं, जिसमें यूनानी के 93 शब्द और NASB में 127 शब्द हैं।[1] पौलुस की विचार प्रक्रिया के पीछे चलना चुनौती भरा हो सकता है!

पौलुस का परिचय

क्योंकि पौलुस रोम कभी नहीं गया था (आयत 13), इसलिए उसके आरम्भिक शब्द एक व्यक्तिगत परिचय का काम करते हैं। यह तो ऐसा है, जैसे यह प्रेरित रोम के मसीही लोगों के सामने खड़ा हो और अपनी बाहें फैलाए कह रहा हो, ''मुझे अपना परिचय देने दें!''

पौलुस ने पहले अपनी *स्थिति* की बात की: वह ''यीशु मसीह का दास'' (आयत 1ख) था। ''दास'' शब्द ''गुलाम'' के लिए यूनानी शब्द (*doulos*) से लिया गया है। रोमी लोग ''गुलाम'' शब्द से और इसके अर्थ से अच्छी तरह परिचित थे। यह अनुमान लगाया गया है कि रोम की आधी से अधिक जनसंख्या गुलाम थी (लगभग 6,00,000)। औसतन रोमी व्यक्ति गुलाम कहलाना अपमान समझता था। गुलाम किसी दूसरे के अधीन होता था यानी उसे सम्पत्ति माना जाता था और उसके अपने कोई अधिकार नहीं होते थे। उसके जीने का एकमात्र उद्देश्य अपने मालिक को प्रसन्न करना होता था तौ भी पौलुस ने अपना परिचय गुलाम के रूप में कराया: ''मसीह यीशु का'' गुलाम। यह प्रेरित *स्वेच्छा* से गुलाम था। वह अपने बारे में नहीं सोचता था, बल्कि अपने स्वामी की बात मानने के लिए जीता था (गलातियों 2:20)।

आप और मैं भी यीशु के गुलाम हैं। हमें उसके लहू से खरीदा गया है (देखें 1 कुरिन्थियों 6:19, 20; 7:22, 23; 9:19) यानी हम उसके हैं। रोमियों के पत्र में बाद में, पौलुस ने ज़ोर देकर कहा कि मसीह में बपतिस्मा लेने पर (रोमियों 6:3-6) हम ''धार्मिकता के दास'' (आयतें 17, 18) बन जाते हैं। आइए हम अपने हर काम में अपने धर्मी स्वामी (प्रभु) को महिमा देने का निश्चय कर लें।

यह कहने के बाद कि वह गुलाम है, पौलुस ने अपनी *प्राथमिकता* की बात की: वह ''प्रेरित होने के लिए बुलाया गया'' था (1:1ग)। मुख्यतया वह यीशु का गुलाम था, उसके बाद वह एक प्रेरित था। राज्य में हमारी भूमिका चाहे जो भी हो, हमें सबसे पहले अपने आप को दास ही मानना चाहिए।

''प्रेरित'' के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''apostle'' यूनानी भाषा के शब्द (*apostolos*) से लिया गया है। यह क्रिया के संज्ञा रूप के साथ ''से'' (*apo*) के लिए उपसर्ग को मिलाता है, जिसका अर्थ ''भेजना'' (*stello*) हो सकता है। ''प्रेरित'' का मूल अर्थ है ''भेजा हुआ।''[2] कई बार इस शब्द का इस्तेमाल सामान्य अर्थ में किया जाता है। यूहन्ना 13:16 में इसका अनुवाद ''भेजा हुआ'' और 2 कुरिन्थियों 8:23 और फिलिप्पियों 2:25 में इसका अनुवाद ''भेजे हुए'' हुआ है। बरनबास को ''प्रेरित'' (प्रेरितों 14:14) कहा जाता था, क्योंकि उसे अंताकिया की मण्डली द्वारा भेजा गया था (प्रेरितों 13:1-3)। आमतौर पर नये नियम में ''प्रेरित'' शब्द का इस्तेमाल स्वयं यीशु द्वारा चुने हुओं और भेजे हुओं अर्थात बारह चेलों (लूका 6:13; प्रेरितों 1:26) और पौलुस के लिए किया जाता है। पौलुस को मसीह द्वारा अन्य जातियों के लिए अपना प्रेरित होने के लिए चुना गया था (प्रेरितों 9:15; देखें रोमियों 1:5)।

पौलुस के आलोचक उस पर अपने आप बना प्रेरित होने का आरोप लगाते थे, जिस कारण उसने ज़ोर देकर कहा कि उसे ''प्रेरित होने के लिए बुलाया गया'' था।[3] उसे ''परमेश्वर की इच्छा से ... *बुलाया गया*'' था (1 कुरिन्थियों 1:1; देखें गलातियों 1:1; इफिसियों 1:1; कुलुस्सियों 1:1; 1 तीमुथियुस 1:1; 2 तीमुथियुस 1:1)। यह ईश्वरीय बुलाहट दमिश्क में हुई, जहां उसे ''अनुग्रह और प्रेरिताई'' दोनों मिले (रोमियों 1:5) थे।

अपनी स्थिति और प्राथमिकता बताने के बाद पौलुस ने अपने *उद्देश्य* पर ज़ोर दिया। उसे ''परमेश्वर के सुसमाचार के लिए अलग किया गया था'' (आयत 1घ)। गुडस्पीड के संस्करण

में ''परमेश्वर के शुभ समाचार को सुनाने के लिए अलग किया गया'' है। आयत 15 में पौलुस ने अपने पाठकों को बताया कि ''मैं तुम्हें भी सुसमाचार सुनाने को भरसक तैयार हूं।'' जीवन में उसका उद्देश्य सबको सुसमाचार बताना था।

पौलुस एक समर्पित फरीसी था (फिलिप्पियों 3:5, 6)। इस कारण हो सकता है कि उसने शब्दों का खेल इस्तेमाल किया हो। यूनानी शब्द (*aphorismenos*) के अनुवाद ''अलग किया हुआ'' का वही मूल अर्थ है, जो ''फरीसी'' (*pharisaios*) का।[4] एंडर्स नाइग्रन ने लिखा है, ''फरीसी के रूप में उसने अपने आप को व्यवस्था के लिए अलग किया हुआ था, परन्तु परमेश्वर ने उसे किसी बिल्कुल ही अलग चीज़ अर्थात 'परमेश्वर के सुसमाचार के लिए' अलग कर लिया था।''[5]

सुसमाचार सहित

बेशक, पौलुस अपना परिचय करा रहा था, परन्तु उसने एकदम से अपनी ओर से ध्यान हटाकर सुसमाचार की ओर कर दिया: ''परमेश्वर के सुसमाचार के लिए अलग किया गया'' (रोमियों 1:1घ)। यूनानी शब्द (*euangelion*), जिसका अनुवाद ''सुसमाचार'' हुआ है, का अर्थ है ''शुभ'' (*eu*) ''समाचार'' या ''संदेश'' (*angelion*)।

समाचार किसी वास्तविक घटना की रिपोर्ट को कहा जाता है, परन्तु यह इससे कहीं बढ़कर है। आज सुबह मैंने अपने बाल बनाए, लेकिन मैं कुछ भूल गया, परन्तु इसे समाचार कहना कठिन है। समाचार घटने वाली किसी ऐसी बात को कहा जाता है, जिसका *महत्व* हो। सच तो यह है कि सुसमाचार ''समाचार'' होने से यह संकेत मिलता है कि यह वास्तव में एक घटित घटना है न कि कोई परिकथा, इसलिए इसका *महत्व* है! परन्तु सुसमाचार समाचार से कहीं बढ़कर है, क्योंकि यह *शुभ* समाचार है। यदि मेरी नौकरी छूट जाए तो यह महत्वपूर्ण बात होगी, परन्तु मेरी पत्नी इसे अच्छी खबर नहीं मानेगी। यदि कोई मुझे बहुत सा धन दे दे तो वह इसे ''अच्छी'' और ''खबर'' दोनों कहेगी! सुसमाचार की ''अच्छी खबर'' यह है कि चाहे हम पाप में खोए हुए थे और अपने आप को बचा नहीं सकते थे, परन्तु परमेश्वर ने हम से प्रेम किया और अपने पुत्र को हमारे लिए मरने को भेज दिया ताकि हम बचाए जा सकें (यूहन्ना 3:16)। शुभ समाचार का सार मसीह की मृत्यु, गाड़े जाना और जी उठना है (1 कुरिन्थियों 15:1-4)।

इस शुभ समाचार के सम्बन्ध में पौलुस ने पहले यह लिखा कि यह *परमेश्वर की ओर से* दिया गया था।[6] उसने इसे ''परमेश्वर का सुसमाचार'' कहा (रोमियों 1:1घ)। सुसमाचार पौलुस के दिमाग की उपज नहीं थी, न ही यह मनुष्य की बुद्धि की खोज, यह तो स्वयं परमेश्वर की ओर से दिया गया। AB में से ''परमेश्वर का और उसकी ओर से'' शुभ समाचार कहा गया है।

फिर पौलुस ने लिखा कि सुसमाचार *की प्रतिज्ञा भविष्यवक्ताओं के द्वारा* की गई थी: ''जिसकी उसने पहिले ही से अपने भविष्यवक्ताओं के द्वारा पवित्र शास्त्र में'' (आयत 2) प्रतिज्ञा की थी। वह चाहता था कि हर किसी को पता चल जाए कि ''यीशु मसीह का शुभ समाचार पुराने नियम की जमीन में मज़बूती से लगा हुआ है''[7] (उदाहरण के लिए देखें 1:17)। रोमियों की पुस्तक में इब्रानी धर्मशास्त्र से चौहत्तर हवाले हैं।[8]

सबसे बढ़कर पौलुस अपने पाठकों को यह समझाना चाहता था कि सुसमाचार *यीशु पर*

केन्द्रित है। यह ''परमेश्वर का सुसमाचार ... अपने पुत्र के विषय में'' था (आयतें 1, 3)। फिलिप्स के संस्करण में ''सुसमाचार परमेश्वर के पुत्र पर केन्द्रित है'' है (आयत 3क)। सुसमाचार का एक ही केन्द्र है और वह केन्द्र मसीह है।[9]

यीशु पर ज़ोर देना

यहां पर पौलुस का ध्यान फिर से बंट गया, इस बार यह ध्यान यीशु पर है। 3 और 4 आयतों में मसीह से जुड़े वचनों के महान कथनों में से एक मिलता है। पहले तो पौलुस ने कहा कि यीशु ''शरीर के भाव से दाऊद के वंश से उत्पन्न हुआ'' (आयत 3ख)। जहां तक मसीह के मानवीय पक्ष की बात है, वह राजा दाऊद की सन्तान था (मत्ती 1:1), जिसका जन्म दाऊद की वंशज मरियम से हुआ था (लूका 1:27)। इसलिए यीशु पूर्णतया मनुष्य था। इसके साथ ही वह पूर्णतया परमेश्वर भी था। वह ''पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है'' (आयत 4)।

आयत 3 और 4 का अन्तर स्पष्ट है: उसके अपने शरीर के सम्बन्ध में यीशु दाऊद की संतान था, जबकि अपनी आत्मा के सम्बन्ध में वह परमेश्वर का पुत्र था। जी उठना उसके ईश्वरीय पुत्र होने का निर्विवाद प्रमाण देता है। गुडस्पीड ने इन आयतों के सार का अनुवाद इस प्रकार किया है: वह ''शारीरिक रूप में दाऊद का वंशज था, और मुर्दों में से जी उठने के द्वारा ... परमेश्वर का पुत्र घोषित किया गया।'' इसलिए इसका मूल अर्थ स्पष्ट है, परन्तु आयत 4 में इतनी अधिक जानकारी है कि हमें इसे टुकड़े-टुकड़े करके खोलना पड़ेगा।

यीशु ''परमेश्वर का पुत्र *ठहरा* है।'' जी उठने से यीशु परमेश्वर का पुत्र नहीं *बना*; वह हमेशा से ईश्वरीय था; बल्कि जी उठना परमेश्वर की निरन्तर घोषणा थी कि ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूं'' (मत्ती 17:5; देखें 3:17)। क्रूस संसार को यह कहने का ढंग था कि यीशु परमेश्वर का पुत्र *नहीं* था (देखें मत्ती 27:40) जबकि जी उठना परमेश्वर का यह घोषणा करने का ढंग था, ''हां, वह है!''

यीशु ''*सामर्थ के साथ* परमेश्वर का पुत्र ठहरा है।'' रोमी लोग सामर्थ के बारे में जानते थे, क्योंकि वे सामर्थ को काम में लाते और शक्ति की पूजा करते थे। यदि आप उनसे पूछते कि ''शक्ति किसके पास है?'' तो उनके उत्तर होता, ''सम्राट के पास, जिसे सेना का समर्थन है।'' बेशक, जिसके पास सचमुच में शक्ति थी, वह परमेश्वर है और उसने अपनी महान शक्ति का इस्तेमाल अपने पुत्र को मुर्दों में से जिलाने के लिए किया था।

यीशु ''मरे हुओं में से *जी उठने के कारण* ... परमेश्वर का पुत्र ठहरा है।''[10] छुटकारे की परमेश्वर की योजना में जी उठने के महत्व को कम नहीं किया जा सकता। यदि मसीह की देह कब्र में पड़ी रहती तो एक सवाल खड़ा रहना था कि परमेश्वर को पाप के लिए उसका बलिदान स्वीकार हुआ था या नहीं। यह तथ्य कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिला दिया, इस बात की घोषणा है कि उसका बलिदान स्वीकार कर लिया गया था यानी पाप के विरुद्ध परमेश्वर का पवित्र क्रोध (रोमियों 1:18) शान्त हो गया है (देखें रोमियों 3:25)! यीशु का जी उठना अनोखा था, क्योंकि दूसरे लोग जी तो उठे थे, परन्तु यीशु ''फिर कभी न मरने के लिए'' जी उठा था (6:9)।

यह अपने आप में अनोखा जी उठना यीशु के कामों और उसकी बातों पर परमेश्वर की स्वीकृति की मुहर था!

यीशु को ''पवित्रता के आत्मा के भाव से'' जी उठने के कारण परमेश्वर का पुत्र घोषित किया गया था। हिन्दी सहित कई अनुवादों में आत्मा के लिए अंग्रेज़ी भाषा के शब्द ''spirit'' का ''s'' छोटा दिया गया है, जो यह संकेत देने के लिए है कि यह यीशु की अपनी आत्मा या उसके आत्मिक स्वभाव की बात है (KJV; NRSV; गुडस्पीड)। परन्तु अधिकतर अनुवादों में ''S'' बड़ा है, जो इसे पवित्र आत्मा होने का संकेत देता है।[11] एफ. एफ. ब्रूस के अनुसार, '' *पवित्रता का आत्मा* 'पवित्र आत्मा' कहने का इब्रानी ढंग है।''[12] ''पवित्रता के आत्मा के भाव से'' वाक्यांश का अर्थ पवित्र आत्मा द्वारा जी उठने की कहानी बताने का तथ्य हो सकता है, परन्तु सम्भवतया यह आत्मा की सामर्थ से यीशु के जी उठने की बात हो सकती है (देखें रोमियों 8:11)।

रोमियों 1:3, 4 आयत 4 के अन्त में यीशु के पदनाम से चरम पर पहुंचती हैं: ''हमारे प्रभु यीशु मसीह।'' ये शब्द आयत 3 के आरम्भ के शब्दों से मिलते हैं। दोनों को मिलाने पर हमें ''अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह'' मिलता है। ''हमारे प्रभु यीशु मसीह'' उस सब की पूर्ण अभिव्यक्ति है, जो यीशु है और हर शब्द महत्व से भरा हुआ है। ''यीशु'' उसे उद्धार का स्रोत घोषित करता है। ''मसीह'' अभिषिक्त, राजा, जिसकी प्रतीक्षा यहूदी लोग सदियों से कर रहे थे, के शब्द ''मसायाह'' का यूनानी रूप है। ''प्रभु'' का अर्थ ''स्वामी'' या ''हाकिम'' है। यह तीहरा, व्यापक शीर्षक यहूदियों लिए सबसे महत्वपूर्ण शब्द (''मसायाह'') के साथ यूनानियों के लिए सार्थक शब्द (''प्रभु'') को मिला देता है। पूरे पत्र में, हम पौलुस को यहूदियों और अन्यजातियों से आग्रह करने के प्रयास करते देखेंगे।

पौलुस को योग्य बनाना

यीशु पर चर्चा करना पौलुस को पूरी तरह घुमा कर अपनी ओर ले आया। ''जिस के द्वारा हमें[13] अनुग्रह और प्रेरिताई मिली'' (आयत 5क)। ''अनुग्रह [*charis*] पौलुस के पसन्दीदा शब्दों में से एक था और उसने इसका इस्तेमाल कई तरह से किया, परन्तु हमेशा इस सोच के साथ कि यह उन लोगों के लिए परमेश्वर का दान है, जो इसके योग्य नहीं थे।''[14] जब पौलुस ने कहा कि उसे यीशु के द्वारा ''अनुग्रह मिला'' तो उसके दिमाग में अपने उद्धार की बात हो सकती है (देखें 1 तीमुथियुस 1:15, 16)। अधिक सम्भावना यह है कि वह उस अद्भुत सच्चाई की बात कर रहा था कि यीशु ने उसे अयोग्य होने के बावजूद अन्यजातियों के लिए प्रेरित चुना था (रोमियों 15:15, 16; 1 कुरिन्थियों 15:9, 10; इफिसियों 3:7, 8; 1 तीमुथियुस 1:12-14)। जहां तक पौलुस की बात है, *हर* मसीह गुण और कार्य परमेश्वर की ओर से दिया गया था, जो प्रभु के अद्भुत अनुग्रह की अभिव्यक्ति था (रोमियों 12:6-8)।

पौलुस को दमिश्क में कई साल पहले ''अनुग्रह और प्रेरिताई मिली'' थी। यीशु ने उस नगर के मार्ग पर उसे दर्शन दिया था (प्रेरितों 9:3-5) जिससे उसे प्रेरित होने योग्य बनाया गया था (देखें प्रेरितों 1:22; 1 कुरिन्थियों 15:8-10)। फिर प्रभु ने पौलुस को बपतिस्मा देने के लिए उसके हनन्याह नामक प्रचारक को भेजा था (प्रेरितों 22:16; 9:18) और उसे ईश्वरीय आज्ञा दी ''परन्तु

प्रभु ने उससे कहा, कि तू चला जा; क्योंकि यह, तो अन्यजातियों और राजाओं, और इस्राएलियों के साम्हने मेरा नाम प्रकट करने के लिए मेरा चुना हुआ पात्र है'' (प्रेरितों 9:15)।

प्रेरितों के अन्यजातियों के पास जाने पर पौलुस ने क्या करना था? आपकी आरम्भिक टिप्पणियां जारी रखते हुए पौलुस ने आगे कहा, ''उसके नाम के कारण सब जातियों के लोग विश्वास[15] करके उस की मानें'' (रोमियों 1:5ख)। पत्र में ''विश्वास'' (*pistis*) फाउकले यहां पहली बार आया है, जो अपने विषय को आगे बढ़ाने के लिए पौलुस का मुख्य शब्द था। उसने ज़ोर देकर कहा कि हमारा उद्धार विश्वास के आधार पर होता है। परन्तु अध्ययन करते हुए, याद रखें कि उसके कहने का अर्थ मुर्दा या बेफल विश्वास नहीं (देखें याकूब 2:17, 26), बल्कि जीवित और सक्रिय विश्वास था। अनुवादित शब्द ''मानें'' (*hupakoe*) उपसर्ग ''अधीन'' (*hupo*) के साथ ''सुनना'' (*akouo*) के लिए शब्द को मिलाया है। इस में अधीनता का विचार पाया जाता है।[16]

कई अनुवादों में ''विश्वास की मानें'' का अनुवाद इस प्रकार से हुआ है:

''आज्ञाकारिता जो विश्वास से आती है'' (NIV)
''विश्वास को आज्ञाकारिता'' (Phillips)
''विश्वास और आज्ञाकारिता'' (NEB)
''विश्वास करना और बात मानना'' (NCV)
''विश्वासयोग्य आज्ञाकारिता'' (Barclay)

डग्लस जे. मू ने टिप्पणी की, ''वास्तविक हो तो विश्वास का परिणाम हमेशा आज्ञाकारिता होता है; परमेश्वर को भाने वाली होने के लिए आज्ञाकारिता, के साथ विश्वास होना आवश्यक है।''[17] डी. स्टुअर्ट ब्रिस्को का अवलोकन है, ''यह ध्यान देना आवश्यक है कि पौलुस के लिए 'विश्वास' बौद्धिक सहमति या भरोसे के व्यवहार से कहीं बढ़कर था। उसके प्रचार में विश्वास में आज्ञापालन की जीवन शैली थी, जिस कारण जहां भी वह गया, उसने वह सच्चाई दिखाई जिससे लोगों को सहमत होना चाहिए, प्रतिज्ञाएं जिन पर वे भरोसा रख सकते हैं, और आज्ञाएं जो उन्हें माननी चाहिए।''[18] पौलुस के दिमाग में सच्चे विश्वास और सच्ची आज्ञाकारिता को अलग नहीं किया जा सकता था। कई बार तो उसने इन शब्दों का इस्तेमाल एक-दूसरे की जगह भी किया (उदाहरण के लिए देखें रोमियों 10:16; KJV)। बचाने वाले विश्वास और परमेश्वर को स्वीकार्य आज्ञाकारिता को एक ही सिक्के के दो पहलुओं के रूप में विचार करें। उन पर चर्चा अलग-अलग की जा सकती है। परन्तु उन्हें अलग नहीं किया जा सकता।[19]

यीशु को ऊंचा करना

हमने यीशु द्वारा पौलुस को अन्यजातियों का प्रेरित बनाने के वाक्य को पूरा नहीं किया है। पौलुस चाहता था कि ''*उसके नाम के कारण* सब जातियों के लोग विश्वास करके उस की मानें'' (1:5ख)। अन्यजातियों में प्रचार करने का पौलुस का कारण समतल था, यानी उसे पाप में खोए हुए संसार के पास जाना था। उसका सीधा कारण भी था कि हर काम, जो वह करे उससे स्वर्ग में

उसके प्रभु की महिमा हो। NLT में आयत 5 के अन्तिम भाग का अनुवाद ''उसके नाम को महिमा देते हुए'' है।

पाठकों को शामिल करते हुए

अपना निजी परिचय देना बन्द करते हुए, पौलुस आराधना अन्यजातियों (आयत 5)से रोम के अन्यजातियों की ओर मुड़ गया: ''जिन (अन्यजातियों) में तुम भी यीशु मसीह के होने के लिए बुलाए गए हो'' (आयत 6)। अनुवादित शब्द ''बुलाए गए'' उसी यूनानी शब्द (*kletos*) से लिया गया है, जिसका इस्तेमाल पौलुस ने आयत 1 में किया; इसका अर्थ ''ईश्वरीय बुलाहट'' है। आपको और मुझे पौलुस की बात विशेष स्वर्गीय दर्शन के द्वारा नहीं बुलाया गया, परन्तु हमें सुसमाचार के द्वारा बुलाया गया है (2 थिस्सलुनीकियों 2:14)। हमें पौलुस की तरह प्रेरित होने के लिए नहीं बुलाया गया है, परन्तु हमें यीशु मसीह के होने के लिए बुलाया गया है (रोमियों 1:6; NRSV)। हमारी ईश्वरीय बुलाहट हमें गौरव और महत्व देती है।

पवित्र लोगों को (1:7क)

पौलुस उन्हें सम्बोधन करने के लिए, जिन्हें वह लिख रहा था, तैयार था। वह केवल इतना ही कह सकता था ''रोम की कलीसिया (या मण्डली) के नाम'' या ''रोम के मसीही लोगों के नाम।'' इसके बजाय उसने अर्थ भरी सच्चाईयों को जोड़ा। उसने ''उन सब के नाम जो रोम में परमेश्वर के प्यारे है और पवित्र होने के लिए बुलाए गए है'' अपनी टिप्पणीयां दी (आयत 7 क)।

परमेश्वर के प्रेमी !

मसीही लोग ''परमेश्वर के प्यारे'' हैं। बेशक परमेश्वर हर किसी से प्रेम करता है (यूहन्ना 3:16) परन्तु जिन्होंने उसकी बुलाहट को मान कर उसे हां कह दिया है, उनके लिए उसका विशेष प्रेम है। ''देखो पिता ने हमसे कैसा प्रेम किया है, कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएं (1 यूहन्ना 3:1क) ! हो सकता है कि आपको लगे कि कोई आप से प्रेम नहीं करता, परन्तु यदि आप मसीही हैं, तो यकीन जानें कि प्रभु आप से प्रेम *करता* है। आप को ''परमेश्वर के प्रेम के अंतरंग दायरे में ठहराया गया है।''[20]

परमेश्वर द्वारा अलग किए गए

इसके अलावा मसीही लोग ''पवित्र लोग'' अर्थात ''संत'' हैं। अंग्रेज़ी शब्द ''संत'' का दुरुपयोग और अपप्रयोग हुआ है। कैथोलिक धर्म में, इसका मुख्य इस्तेमाल उन कुछेक चुनिन्दा लोगों के लिए किया जाता है, जिन्हें मरने के बाद ''संत'' का दर्जा दिया गया हो। संसार में इसका अर्थ आमतौर पर सिद्धता था, कम से कम सिद्ध होने की निकटता के लिए किया जाता है। (यही कारण है कि कई बार हमें ''वह संत नहीं है!'' जैसी अभिव्यक्तियां सुनने को मिलती हैं!) बाइबल सिखाती है कि हर मसीही व्यक्ति ''पवित्र जन'' अर्थात ''संत'' है। उदाहरण के लिए 2 थिस्सलुनीकियों 1:10 में ''सब विश्वास करने वालों'' के साथ ''पवित्र लोगों'' को एक-दूसरे के स्थान पर इस्तेमाल किया गया है। ''पवित्र लोगों'' के लिए अंग्रेज़ी भाषा का शब्द

''saint'' यूनानी (*hagios*) शब्द उसी मूल विशेषण शब्द से है, जिसका अर्थ ''पवित्र'' है; दोनों ही इस बात का संकेत देते हैं कि जिसे ''अलग किया गया'' है। क्रिया रूप ''पवित्र करना'' है। हमारा उद्धार होने पर हमें परमेश्वर द्वारा ''अलग किया जाता'' (''पवित्र किया जाता'') है (1 कुरिन्थियों 6:11; इब्रानियों 2:11; 13:12)। फिर हमें ''पवित्र की हुई'' जीवन शैली के अनुसार जीने की चुनौती दी जाती है (इब्रानियों 12:14; देखें 1 थिस्सलुनीकियों 4:3; रोमियों 6:19, 22)।[21]

कई लोग बाइबल के लेखकों को ''संत मत्ती,'' ''संत मरकुस'' आदि नामों से पुकारते हैं। यदि आप मसीही हैं तो आप ''संत'' (यहां अपना नाम डालते)'' हैं। नहीं, मेरे कहने का अर्थ यह नहीं है कि आप अपने नाम के साथ ''संत'' लगाएं या दूसरों को ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करें (देखें मत्ती 23:8-10)। मैं तो केवल इस बात पर ज़ोर दे रहा हूं कि यदि आप मसीही हैं तो आप परमेश्वर के लिए विशेष हैं!

अभिवादन (1:7)

1 से 7 आयतों के लम्बे-लम्बे वाक्य करें। पौलुस ने एक अभिवादन के साथ खत्म किया: ''हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे'' (आयत 7ख)। ''अनुग्रह'' (*charis*) सामान्य यूनानी अभिवादन था जबकि ''शान्ति'' (*eirene*, इब्रानी शब्द *shalom* का यूनानी रूप) सामान्य यहूदी अभिवादन। इस प्रकार हमें एक और संकेत मिलता है कि पौलुस अन्यजाति और यहूदियों दोनों को लुभाने की कोशिश कर रहा था।

जो ''अनुग्रह'' और ''शान्ति'' वह अपने पाठकों के लिए चाहता था वह ''हमारे पिता परमेश्वर की ओर से'' मिलता है, और अन्त तक रहने वाली शान्ति केवल मसीह यीशु में है।

सारांश

साधारणतया, नये नियम में पत्राचार का आरम्भ पत्र लिखने वाले के नाम, प्राप्तकर्त्ताओं के नाम और अभिवादन के साथ होता था। जैसा कि हमने देखा है, रोमियों के नाम पौलुस के पत्र का आरम्भ इन तीनों बातों के साथ हुआ। पत्रों के आरम्भ में, जो एक और बात आमतौर पर पाई जाती है, वह है धन्यवाद। 1:8 में पौलुस ने रोम के मसीही लोगों के लिए धन्यवाद व्यक्त किया; हमारा अगला अध्ययन वहीं से आरम्भ होगा।

रोमियों की पहली सात आयतें बड़ी सावधानी से खोलते हुए, मुझे उम्मीद है कि हमारा ध्यान इन वचनों के पूरे संदेश से हटा नहीं है। विशेषकर मुझे उम्मीद है कि मैंने यह प्रभाव नहीं छोड़ा होगा कि रोमियों की पत्री समय के साथ कुल जमा हुआ प्राचीन ग्रंथ बन गया है, जो सदियों पहले रहने वाले किसी व्यक्ति ने उन लोगों के नाम लिखा, जो बहुत पहले मर चुके हैं। इस पत्र को एक जीवित दस्तावेज़ के रूप में, आज भी उतना ही उपयुक्त मान कर देखना चाहिए, जितना यह उस समय था, जब लिखा गया।

पौलुस ने यह पत्र उनके नाम लिखा ''जो रोम में पवित्र लोग (संत) होने के लिए बुलाए गए हैं,'' परन्तु हम यह पत्र उन सब लोगों के लिए भी मान सकते हैं ''जो हर जगह हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से प्रार्थना करते हैं'' (1 कुरिन्थियों 1:2)। एक लेखक ने सुझाव दिया है कि इस पत्र का नाम ''रोमियों व अन्य लोगों के नाम संत पौलुस का पत्र'' हो सकता है।[22] क्रेंट हार्टमैन यह

कहावत बताते हैं, ''बाइबल की कोई भी बात *हमें* नहीं लिखी गई, परन्तु इसकी सब बातें हमारे *लिए* लिखी गई।''[23]

यह पत्र आपके लिए लिखा गया था। जब मैं एक लड़का था, और मेरी मां यह कहती थी कि ''आज तेरी चिट्ठी आई है'' तो मैं बड़ा रोमांचित हो जाता था। अब मैं अधिकतर कम्प्यूटर द्वारा इंटरनेट से भेजी जाने वाली डाक ई-मेल (इलैक्ट्रॉनिक मेल) पर निर्भर हो गया हूं, पर आज भी मुझे यह सुनना अच्छा लगता है कि ''तेरी डाक आई है!'' मैं आप से कहता हूं ''आप की डाक आई है: यह स्वयं प्रेरित पौलुस की ओर से पत्र है!''

एक कैथोलिक प्रीस्ट कैथोलिक चर्च के सदस्य होने के लाभ बता रहा था। उसने बड़े गर्व से कहा, ''हमारे पास पौलुस की भी हड्डियां हैं!'' उसके एक सुनने वाले ने उत्तर दिया, ''जिस कलीसिया का मैं सदस्य हूं उसके पास पौलुस की कुछ निशानियां हैं।'' प्रीस्ट ने कहा, ''असल में, वे हैं क्या?'' उसे यह उत्तर मिला, ''हमारे पास कुछ पत्र हैं।''[24] कुछ हड्डियां होने से बढ़कर पौलुस के जीवित पत्र हमारे पास होना क्या रोमांचकारी नहीं है? अगले पाठ में हम पौलुस के रोमांचकारी पत्रों में से एक का अध्ययन जारी रखेंगे।

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

इस पाठ का वैकल्पिक शीर्षक ''रोमियों 1:1-7 को खोलना'' हो सकता है। परिचय में, मैं आधुनिक पत्र-लेखन के ढंग को प्राचीन पत्र लेखन से अलग करता हूं। प्रेषक का नाम पहले लिखने के बारे में, यदि आपके सुनने वाले ई-मेल से परिचित हैं, तो आप ध्यान दिला सकते हैं कि ई-मेल लिखने का ढंग प्राचीन ढंग से मेल खाता है।

टिप्पणियां

[1]कुछ आधुनिक अनुवाद इस वाक्य को कई छोटे-छोटे भागों में बांटते हैं। [2]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ. अंगर एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 30. [3]NASB ''as'' इटैलिक किया गया है, इसे अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया था। ''as'' सम्भवतया इसलिए जोड़ा गया ताकि पाठक यह न समझें कि ''कहलाया'' का अर्थ ''के रूप में कहलाया'' है। [4]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज फ़ॉर द वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1994), 47. [5]एंडर्स नाइग्रन, *कमैंट्री ऑन रोमन्स* (फिलाडेल्फिया: फोर्टरेस्ट प्रैस, 1949), 45-46. [6]सुसमाचार पर मेरी कुछ टिप्पणियां ओवरलैंड पार्क चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, ओवरलैंड पार्क, केनसस, 13 जनवरी, 1991 क्रिस बुलड ''ए मैन विद ए मिशन'' से ली गई हैं। [7]डग्लस जे. मू, *रोमन्स,* दि NIV एप्लीकेशन कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 2000), 36. [8]लैरी डीयसन, ''*दि राइटसनेस ऑफ़ गॉड*'': *एन इन-डेप्थ स्टडी ऑफ़ रोमन्स,* संशो. (क्लिफटॉन पार्क, न्यू यॉर्क लाइफ कम्युनिकेशंस, 1989), 40, n. 2. [9]जेम्स बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन रोमन्स* (ऑस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशंग हाउस, 1973), 7. [10]यूनानी धर्म शास्त्र का मूल अर्थ ''मरे हुओं का जी उठना है।'' इसलिए कइयों को लगता है कि यह आयत यीशु को मुर्दों के रूप में जिलाने के प्रमाण के रूप में भी कि वह परमेश्वर है। परन्तु प्रेरितों 26:23 में उसी भाषा का इस्तेमाल किया गया है, जहां संदर्भ संकेत देता है कि यीशु का जी उठना विचाराधीन है। इसके

अलावा रोमियों की पूरी पुस्तक में ज़ोर यीशु के अपने जी उठने पर है (देखें 6:4, 5, 9; 7:4; 8:11, 34; 10:9)।

[11]रोमियों की पुस्तक में शरीर को आम तौर पर (पवित्र) आत्मा से अलग किया गया (देखें 8:4-6, 9, 13)। [12]एफ. एफ. ब्रूस, *दि लैटर ऑफ़ पॉल टू द रोमन्स,* दि टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 69. [13]"हमें" बहुवचन का इस्तेमाल करके पौलुस सभी प्रेरितों को शामिल कर रहा हो सकता है; परन्तु सम्भवतया वह बहुवचन का अर्थ अपने लिए करने के लिए "सम्पादकीय हम" के हमारे जैसे अर्थ में कर रहा हो। [14]डी. स्टुअर्ट ब्रिस्को, *मास्टरिंग द न्यू टैस्टामेंट: रोमन्स,* दि कम्युनिकेटर'स कमैंट्री सीरीज़ (डलास: वर्ड पब्लिशिंग, 1982), 26. [15]"विश्वास का आज्ञापालन" यूनानी धर्मशास्त्र का मूल शब्द है। इसका अर्थ "आज्ञापालन जिसमें विश्वास हो" हो सकता है, परन्तु अधिकतर यूनानी विद्वान यह मानते हैं कि इस वाक्यांश का अर्थ सम्भवतया "विश्वास के कारण होने वाला आज्ञापालन" है। KJV में "the faith" है, परन्तु "faith" के लिए यूनानी शब्द से पहले कोई निश्चित उप-पद (अंग्रेज़ी में "the") नहीं है। [16]*दि एनलेटिकल ग्रीक लैक्सिकन* (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एण्ड सन्स, 1971), 414. [17]मू. 38. [18]ब्रिस्को, 27. [19]मू. 42. [20]*न्यू इंटरनैशनल बाइबल कमैंट्री* एडि. एफ. एफ. ब्रूस (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1979), 1317 में लेसली सी. एलन "रोमन्स।"

[21]लेखक मसीही बनने के समय "स्थिति रूप में" पवित्र होने और "अनुभव रूप में" पवित्र होने की बात करते हैं, जिसमें परमेश्वर की सहायता से नया मसीही मसीह में और परमेश्वर को मानने वाला और परिपक्व होता है। [22]टी. डब्ल्यू. मैनसन; ब्रूस, 20. [23]ईस्टसाइड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, मिडवेस्ट सिटी, ओक्लाहोमा, 14 दिसंबर, 2003 को क्लास में डेल हार्टमैन द्वारा उद्धृत।